ISSN - 2231-1130
वर्ष–षष्ठम् ; सितम्बर–2015

नई कविता और केदारनाथ सिंह

संदीप कुमार यादव*

नई कविता के प्रमुख कवि केदारनाथ सिंह का हिन्दी साहित्य में आविर्भाव अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तीसरा सप्तक' के सहयोगी कवि के रूप में सन् 1959 ई0 में हुआ था। केदारनाथ सिंह आरम्भ से ही अपने काव्यविषय, बिम्ब–योजना, प्रतीक और काव्यभाषा के कारण एक अलग स्थान रखते हैं। इन्होंने अपनी कविता को संवेदनात्मकता और बौद्धिकता से जोड़ा। इनके सम्बन्ध में आलोचक परमानन्द श्रीवास्तव का यह कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है– ''केदार की कविताओं की दुनियाँ एक ऐसी दुनियाँ है जिनमें रंग, रोशनी, रूप, गन्ध, दृश्य एक–दूसरे में खो जाते हैं। पर यही दुनियाँ है, जिसमें कविता का 'कमिटमेंट' खो नहीं जाता– वहाँ हमें कविता के मूल सरोकार, कविता की बुनियादी चिंता, कविता का कथ्य या सन्देश (बेशक स्थूल अर्थ में नहीं) पूरी तीव्रता के साथ ध्वनित या स्पन्दित रहता है।''[1] केदारनाथ सिंह अपनी कविताओं में नई कविता के मूल्यों के प्रति पूरी तरह सजग रहे हैं। इनकी आस्था प्रगतिशील मूल्यों के प्रति है। कवि की वह दृष्टि जो बेहतर के लिए रूपाकार ग्रहण करती है, उसकी अनुगूँज इनकी रचनाधार्मिकता में विद्यमान है। 'तीसरा सप्तक' के वक्तव्य में कवि ने कहा है– ''समाज के प्रगतिशील तत्त्वों और मानव के उच्चतर मूल्यों की परख मेरी रचनाओं में आ सकी है या नहीं, मैं नहीं जानता, पर उसके प्रति मेरे भीतर एक विश्वास, एक लालसा, एक लपट जरूर है, जिसे मैं हर प्रतिकूल झोंके से बचाने की कोशिश करता हूँ, करता रहूँगा।''[2]

केदारनाथ सिंह का नई कविता से परिचय 'तार सप्तक' के माध्यम से हुआ। 'तार सप्तक' और अज्ञेय का 'इत्यलम्' तथा गिरिजाकुमार माथुर का 'नाश और निर्माण' ने कवि के भीतर नई कविता की भूमि धीरे–धीरे तैयार की। नई कविता वास्तव में आत्म संघर्ष की कविता है। इसमें रूमानी प्रवृत्ति

---

* शोध–छात्र (हिन्दी विभाग) लखनऊ, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

के साथ सहजता भी देखी जा सकती है। नई कविता में प्रयोगवाद वाली कुण्ठा नहीं है, बल्कि यहाँ कवि मानसिक उमंग से परिपूर्ण है–

''नये दिन के साथ
एक पन्ना खुल गया कोरा हमारे प्यार का!
सुबह,
इस पर कहीं अपना नाम तो लिख दो।''[3]

केदारनाथ सिंह प्रगतिशील कवियों से अलग अपने वैचारिक और काव्य मूल्यों के लिए जाने जाते हैं। नई कविता के कवि की संवेदना अपनी पूर्ववर्ती काव्य–परम्परा से भिन्न है। हिन्दी साहित्य में हुए अनेक काव्य–आन्दोलनों के बीच नई कविता ने अपना स्थान बनाने के लिए लम्बा एवं कड़ा संघर्ष किया और उसमें सफल भी हुई। 'अभी बिल्कुल अभी' संग्रह की कविता 'एक पारिवारिक प्रश्न' में केदारनाथ सिंह इसी भाव को व्यक्त करते हैं–

''छोटे से आँगन में,
माँ ने लगाये हैं
तुलसी के बिरवे दो
पिता ने उगाया है
बदगद छतनार।
मैं अपना नन्हा गुलाब
कहाँ रोप दूँ।
मुठ्ठी में प्रश्न लिए
दौड़ रहा हूँ वन–वन,
पर्वत–पर्वत,
रेती–रेती....
लाचार।''[4]

नई कविता की एक प्रमुख विशेषता है– साधारण मनुष्य की प्रतिष्ठा। केदारनाथ सिंह ने अपने काव्य संग्रह 'यहाँ से देखो' और अन्य संग्रहों में भी साधारण मनुष्य को काव्य का नायक बनाया है। इन कविताओं के केन्द्र में साधारण मनुष्य को प्रतिष्ठित किया गया है। कवि का दृष्टिकोण मूल रूप से साधारण मनुष्य का पक्षधर है। यहाँ पर आलोचक नन्द किशोर नवल की टिप्पणी उल्लेखनीय है– ''साधारण मनुष्य या आम आदमी हिन्दी आलोचना का एक चालू मुहावरा है। केदार जी ने अपनी कविता के नायक को इस मुहावरे से नहीं उठाया, बल्कि वह अपनी जगह से चलकर उनकी कविताओं में आया है। इसका सबूत यह है कि वह हमेशा अपने परिवेश और अपने व्यक्तित्व से युक्त है, वह अकेले हो या समूह में। उसमें उम्मीद है, तो पस्ती भी और अपने को कुर्बान कर देने का जोश है, तो परिस्थितियों के आगे असहाय महसूस करने का भाव भी। कभी वह चुप रहता है और कभी मुखर हो उठता है।''[5] केदारनाथ सिंह की अनेक कविताओं में साधारण मनुष्य केन्द्र में है– 'एक ठेठ देहाती कार्यकर्त्ता के प्रति', 'पानी में घिरे हुए लोग', 'कस्बे की धूल', 'जानवर', 'सुई और तागे के बीच में', 'शीतलहरी में बूढ़े आदमी की प्रार्थना', 'स्मारक', बबूल के नीचे सोता बच्चा', 'कन्धे की मृत्यु', 'हीराभाई' इत्यादि प्रमुख हैं। इन कविताओं में कवि ने साधारण मनुष्य की प्रतिष्ठा की है। 'पानी में घिरे हुए लोग' शीर्षक कविता में साधारण जन ही हैं जो प्रार्थना नहीं करते, पानी के खिलाफ संघर्ष करते हैं–

''मगर पानी में घिरे हुए लोग
शिकायत नहीं करते
वे हर कीमत पर अपनी चिलम के छेद में
कहीं–न–कहीं बचा रखते हैं
थोड़ी–सी आग।''[6]

केदारनाथ सिंह आस्थावादी कवि हैं। कवि की आस्था का स्वर, विरूप यथार्थ से जूझने के लिए प्रस्तुत है। दुनियाँ की बदसूरती के खिलाफ,

खूबसूरती के संकल्प की संवेदनशील परिकल्पना। यही कारण है कि उनकी कविता में धुन्ध और गर्द–गुबार से पीड़ित मानवता संघर्षरत तो है लेकिन हताश–निराश नहीं। कवि संघर्ष, पीड़ा, सत्य का संधान किसी कल्पनालोक के अमूर्त आकाश में नहीं करता है, बल्कि उसकी दृष्टि में इसका उत्स जमीनी सच्चाई में अनिवार्यतः अन्तनिर्हित है। 'यहाँ से देखो' और 'जमीन पक रही है' काव्यसंग्रह की अनेक कविताओं में आस्थावादी स्वर दिखाई पड़ता है। 'पृथ्वी रहेगी' शीर्षक कविता में कवि की आशावादिता व्यक्त हुई है–

''मुझे विश्वास है
यह पृथ्वी रहेगी
यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में
यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में
रहते हैं दीमक
जैसे दाने मे ंरह लेता है घुन
यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अन्दर।''[7]

नई कविता में यथार्थवाद का चित्रण हुआ है। कवियों ने अपनी कविता में लौकिकता, यथार्थवादिता, ऐन्द्रीयता, वास्तविकता आदि का सूक्ष्म चित्रण किया है। केदारनाथ सिंह की अनेक कविताओं में यथार्थवाद को देखा जा सकता है। इनकी कई कविताएँ विरूप यथार्थ को उद्घाटित करती हैं। मोहक आवरण में सच की भयावहता आम आदमी तक नहीं पहुँच पाती है परन्तु कवि उसकी गहरी पहचान करता है। 'घोषणा' शीर्षक कविता में कवि सच का उद्घोष पूरी मुखरता से करता है–

मैं घोषित करता हूँ
कि जो सच है
वह सच नहीं है
जो जानता है

उस तक खबर अभी पहुँची ही नहीं

जो हुक्म देता है

वह डरा हुआ है

जो फैसला देता है

उसे पता नहीं

वह गिरफ़्तार है।''[8]

नई कविता ने प्रकृति को विभिन्न रूपों में अंकित किया है। इसमें प्रकृति का अंकन मात्र आलम्बनादि के रूप में ही नहीं हैं वरन् उसके माध्यम से अपने युग की संवेदना भी मुखरित हुई है। नई कविता एक ओर तो प्रकृति के अन्तर्गत विभिन्न नये और परम्परा में उपेक्षित वस्तु–दृश्यों को ग्रहण करती है और दूसरी ओर उसको सर्वथा नये रूप में अंकित करती है। नये कवियों ने प्रकृति सौन्दर्य को एक नया रूप दिया है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में खेत–खलिहान, नदी–पर्वत, शहर–गाँव के सहज जीवन के व्यापक चित्र मिलते हैं। इनकी कविता में प्रकृति–चित्रण के सम्बन्ध में आलोचक विष्णु खरे की यह टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है– ''केदार जी की कविताओं में कहीं भी 'प्रकृति चित्रण' केवल प्रकृति चित्रण की अय्याशी के लिए नहीं है बल्कि प्रकृति उनके यहाँ हमेशा आदमी की विभिन्न भावनाओं और परिस्थितियों के जरिए देखी गई चीज है। प्रकृति उनके लिए मानव से पलायन नहीं है बल्कि परस्पर संतुलन और मित्रता की खोज है।''[9] केदारनाथ सिंह की 'मार्च की सुबह' में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है –

''झर झर झर......

झरती हैं पत्तियाँ सवेरे से,

आज हवा पागल है!

कौन उसे समझाये,

कौन उसे मना करे

दूर–दूर कूलों की

ढेरों खबरें लेकर

कमरे में आती है।''[10]

केदारनाथ सिंह की आरम्भिक कविताओं में वैयक्तिकता व्यक्त हुई है। नई कविता में वैयक्तिकता भी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। कवि ने अपनी अनेक कविताओं में आत्म–विवेचन, आत्म–विश्लेषण और आत्म–विमर्श को व्यक्त किया है। कवि की वैयक्तिकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कविताएँ– 'प्रक्रिया', 'हस्ताक्षर कर देता हूँ', 'अपनी छोटी बच्ची के लिए एक नाम', 'अनागत', 'आत्मचित्र', 'शंका–पुत्र', 'एक पारिवारिक प्रश्न', 'पिता से', 'नीला–पत्थर', 'मैं नहीं हूँ मंत्रद्रष्टा', 'दर्पण से एक निजी बात–चीत', 'जीने के लिए कुछ शर्तें', 'कुछ सवाल अपने से', 'जिद', 'बालू का स्पर्श', 'प्रिय पाठक', 'चेहरा' आदि हैं। 'पत्नी की अट्ठाइसवी पुण्यतिथि पर' नामक कविता में कवि अपनी दिवंगत पत्नी को याद कर रहा है। पत्नी के जाने के बाद कवि के अन्दर एक सूनापन आ गया है–

पहले वह गई

फिर बारी–बारी चले गए

बहुत से दिन

और ढेर सारे पक्षी

और जाने कितनी भाषाएँ

कितने जल–स्रोत चले गए दुनियाँ से

जब वह गई।''[11]

नई कविता के कवियों ने अपनी रचनाओं में व्यंग्य का बहुत सटीक प्रयोग किया है। व्यंग्यपरकता नई कविता की एक प्रमुख विशेषता है। केदारनाथ सिंह ने भी अपनी अनेक कविताओं में व्यंग्य का प्रयोग किया है। कवि की व्यंग्यपरकता उनके रचना संसार में नयी अर्थछवियाँ भरती हैं।

उनकी विनोदवृत्ति, करुणा, पैनापन और बेपर्दगी कविताओं की संवादधर्मिता बढ़ाती है। 'दो मिनट का मौन' नामक कविता हमारे समय की एक अत्यन्त अप्रिय सत्य है– मात्र औपचारिकताओं का निर्वाह। कविता में व्यंग्यधर्मिता उपस्थित है–

"गिर हुए छिलके पर
टूटी हुई घास पर
हर योजना पर
हर विकास पर
दो मिनट का मौन
इस महान् शताब्दी पर
महान् शताब्दी के
महान् इरादों पर
महान् शब्दों पर
और महान् वादों पर
दो मिनट का मौन।"[12]

केदारनाथ सिंह नई कविता के सभी प्रमुख कवियों में अपनी काव्यभाषा, मुक्त–छन्द, बिम्ब–योजना और प्रतीकों के प्रयोग के लिए सर्वाधिक सजग रहे हैं। इन्हें भाषा का जादूगर भी कहा जाता है। कवि ने अपनी काव्यभाषा में लोकभाषा, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, तद्भव–तत्सम, देशज, विदशी, उर्दू, अँग्रेजी सबका खुलकर प्रयोग किया है। केदारनाथ सिंह का नये शब्दों के प्रति गहरा लगाव रहा है। कुँवर नारायण की टिप्पणी है– "केदार की कविताओं में अर्थ 'बोलते' या 'घोषित' नहीं होते 'ध्वनित' होते हैं– भाषा में उसी तरह झंकृत होते है, जैसे बाघ पर एक राग 'बजता' है। बोलरहित संगीत की तरह एक जाने पहचाने राग के आलाप और तानें। संगीत की उपमा सोद्देश्य है। पुराने राग के सरगम को बरक़रार रखते हुए वाद्यकार

जिस तरह अपनी प्रस्तुतियों में कोई नई बात पैदा करता है केदार कुछ–कुछ उसी तरह अपने बुनियादी यकीनों को नई तरह झंकृत करते है। इस उपक्रम में भाषा के पलटे, उपज, लयकारी फिरत वगैरह का काम अपनी तरह रोचक आकर्षण का समा बाँधता है।''[13]

इस प्रकार नई कविता की प्रमुख विशेषताओं को केदारनाथ सिंह की कविता प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। कवि ने अपनी कविताओं में समाज में व्याप्त सभी अच्छे, बुरे और आधुनिक विचार को संवेदना के साथ व्यक्त किया है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण केदारनाथ सिंह नई कविता के प्रमुख कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. प्रतिनिधि कविताएँ– सं0 परमानन्द श्रीवास्तव प्रकाशन – राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0, पहला संस्करण – 1985, पृ0 सं0 06
2. तीसरा सप्तक – सं0 अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण – आठवाँ – 2003, पृ0 सं0 125
3. तीसरा सप्तक – सं0 अज्ञेय, पृ0 सं0 143–144
4. 'अभी बिल्कुल अभी' – केदारनाथ सिंह, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – प्रथम, 1996, पृ0 सं0 31
5. उत्तर केदार – सं0 सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – प्रथम, 1997, पृ0 सं0 80
6. 'यहाँ से देखो' – केदारनाथ सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0लि0, नई दिल्ली, संस्करण – पहला, 1983, पृ0 सं0 18
7. 'यहाँ से देखो' – केदारनाथ सिंह, पृ0 सं0 25
8. 'यहाँ से देखो' – केदारनाथ सिंह, पृ0 सं0 87
9. कवि केदारनाथ सिंह – सं0 भारत यायावार, राजा खुगशाल वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 2004, पृ0 सं0 235
10. 'अभी बिल्कुल अभी' – केदारनाथ सिंह, पृ0 सं0 46

11. 'सृष्टि पर पहरा' – केदारनाथ सिंह राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0, नई दिल्ली संस्करण – पहला, 2014, पृ0 सं0 73

12. 'यहाँ से देखो' – केदारनाथ सिंह, पृ0 सं0 15–16

13. 'मिट्टी की रोशनी' – सं0 अनिल त्रिपाठी, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 2007, पृ0 सं0 13